https://kalaasamiksha.in/
Kalaa Samiksha - Volume 02, No 01, JAN. 2026, PP 01-04 (Total PP 04)
ISSN : 3107- 4936(Online)
Frequency – Monthly

1. RAJASTHANI POTTERY: THE ARTISTIC HERITAGE AND VIBRANT TRADITION OF CLAY (राजस्थान का मृणशिल्प: मिट्टी की कलात्मक विरासत और जीवंत परंपरा)

Dr. Laxman Lal Sargada[a]*, Chanda Damor[b]

[a] Research Supervisor, Associate Professor, Painting, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)

[b] Research Scholar, Research Scholar, Department of Visual Arts, Shri Govind Guru Government College, Banswara (Raj.)

[a] Email: laxmanart31@gmail.com

Abstract

The pottery tradition of Rajasthan, commonly known as terracotta art, is an ancient craft based on "baked clay." It is not only limited to making utilitarian objects but also represents the cultural identity, traditions, and folk life of the region. This craft has been preserved and passed down through generations by the potter community. In this art form, clay is used to create everyday items such as water pots, pitchers, cups, and lamps, which are especially useful in Rajasthan's hot climate. Alongside these, decorative items, idols, and religious objects are also crafted. These products often feature traditional patterns, geometric designs, and motifs inspired by nature and folklore. Major centers of this craft include Jaipur, Bikaner, Jodhpur, and Udaipur. Jaipur is particularly famous for its unique blue pottery. The craft involves both men and women—men typically shape the clay on the wheel, while women assist in preparing the clay and decorating the final products.

The process of pottery making involves several stages: selecting suitable clay, preparing it by removing impurities, shaping it on a wheel, drying it in sunlight, firing it in a kiln, and finally decorating it. Over time, modern designs and products such as lamps, showpieces, and eco-friendly items have also become part of this tradition. Despite its rich heritage, this craft faces challenges due to the increasing use of plastic and machine-made goods. However, efforts by government and organizations are helping promote and sustain this art. Rajasthan's pottery remains a vibrant tradition that needs preservation for future generations.

इस शिल्प में मिट्टी से घड़े, सुराही, कुल्हड़, दीये जैसे दैनिक उपयोग के बर्तन बनाए जाते हैं, जो विशेष रूप से राजस्थान की गर्म जलवायु में उपयोगी होते हैं। इसके साथ ही सजावटी वस्तुएँ, मूर्तियाँ और धार्मिक सामग्री भी बनाई जाती हैं, जिनमें पारंपरिक डिज़ाइन, लोककथाओं और प्रकृति से प्रेरित आकृतियाँ देखने को मिलती हैं। जयपुर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर जैसे क्षेत्र इस कला के प्रमुख केंद्र हैं। जयपुर की ब्लू पॉटरी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। इस शिल्प में पुरुष और महिलाएँ दोनों मिलकर काम करते हैं—पुरुष चाक पर आकार देते हैं, जबकि महिलाएँ मिट्टी तैयार करने और सजावट में योगदान देती हैं।

मृणशिल्प की प्रक्रिया में मिट्टी का चयन, उसकी तैयारी, चाक पर आकार देना, धूप में सुखाना, भट्टी में पकाना और अंत में सजावट करना शामिल होता है। समय के साथ इस कला में आधुनिक डिजाइन और उत्पाद भी शामिल हो गए हैं, जैसे लैंप, शोपीस और इको-फ्रेंडली वस्तुएँ। हालाँकि, प्लास्टिक और मशीन-निर्मित वस्तुओं के कारण इस कला को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। इसके बावजूद, सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों से इस शिल्प को बढ़ावा दिया जा रहा है। राजस्थान का मृणशिल्प आज भी एक जीवंत परंपरा है, जिसे संरक्षित करना अत्यंत आवश्यक है।

Keywords: Terracotta, Potter, Potter's Wheel, Kiln, Terracotta Art, Traditional Designs, Handicraft

मृणशिल्प, कुम्हार, चाक, भट्टी, टेराकोटा कला, पारंपरिक डिज़ाइन, हस्तशिल्प

---

* Corresponding author.

प्रस्तावना:

मृणशिल्प, जिसे सामान्यतः टेराकोटा कहा जाता है, का अर्थ है "पकी हुई मिट्टी"। यह कला मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और

महत्वपूर्ण कलाओं में से एक है, जिसमें साधारण मिट्टी को आकार देकर आग में पकाया जाता है और उसे स्थायी रूप प्रदान किया जाता है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश में मृणशिल्प का विशेष स्थान रहा है, और राजस्थान इस परंपरा का एक प्रमुख केंद्र है।

राजस्थान में मृणशिल्प केवल एक हस्तकला नहीं है, बल्कि यह यहां की सांस्कृतिक पहचान, परंपराओं, आस्थाओं और लोकजीवन का अभिन्न हिस्सा है। प्राचीन काल से ही यहाँ के कुम्हार समुदाय ने मिट्टी को जीवंत रूप देने की कला को संजोए रखा है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है और आज भी ग्रामीण तथा शहरी जीवन में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

राजस्थान की कठोर जलवायु, रेगिस्तानी परिवेश और प्राकृतिक संसाधनों की सीमितता के बावजूद यहाँ के लोगों ने मिट्टी को उपयोगी और सुंदर वस्तुओं में परिवर्तित करने की अद्भुत क्षमता विकसित की है। यह कला न केवल जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करती है, बल्कि सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम भी बनती है।

शिल्प का महत्व और स्वरूप:

राजस्थान का मृणशिल्प उपयोगिता और सौंदर्य का अद्भुत संगम प्रस्तुत करता है। यहाँ के कुम्हार मिट्टी से दैनिक उपयोग की वस्तुएँ जैसे घड़े, सुराही, दीये, कुल्हड़, मटके और चूल्हे बनाते हैं, जो विशेष रूप से गर्म जलवायु में पानी को ठंडा रखने के लिए उपयोगी होते हैं। इन वस्तुओं का वैज्ञानिक आधार भी है, क्योंकि मिट्टी के बर्तनों में पानी प्राकृतिक रूप से ठंडा और शुद्ध रहता है।

Figure 1-1 दैनिक उपयोग की वस्तुएँ

इसके अलावा, सजावटी वस्तुओं का निर्माण भी इस शिल्प का एक महत्वपूर्ण पहलू है। कलाकार मिट्टी से सुंदर फूलदान, दीवार सजावट, खिलौने, मूर्तियाँ और अन्य कलात्मक वस्तुएँ बनाते हैं। इन पर पारंपरिक आकृतियाँ, ज्यामितीय डिज़ाइन, पशु-पक्षियों की आकृतियाँ तथा लोककथाओं से प्रेरित रूपांकन बनाए जाते हैं।

धार्मिक दृष्टि से भी मृणशिल्प का अत्यधिक महत्व है। विभिन्न त्योहारों और अनुष्ठानों में मिट्टी की मूर्तियों और दीयों का विशेष स्थान होता है। दीपावली पर मिट्टी के दीयों का उपयोग, गणेश चतुर्थी पर गणेश प्रतिमाओं का निर्माण तथा अन्य धार्मिक अवसरों पर मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग इस कला की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

कला के प्रमुख केंद्र और कलाकार:

राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में मृणशिल्प की समृद्ध और विविध परंपरा देखने को मिलती है। प्रमुख केंद्रों में जयपुर, अलवर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर शामिल हैं। जयपुर अपने विशिष्ट "ब्लू पॉटरी" के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यह शैली पारंपरिक टेराकोटा से अलग होते हुए भी मृणशिल्प की ही एक अनूठी शाखा है, जिसमें नीले, हरे और सफेद रंगों का आकर्षक संयोजन देखने को मिलता है।

Figure 1-2 ब्लू पॉटरी

बीकानेर और जोधपुर में पारंपरिक लाल मिट्टी के बर्तन बनाए जाते हैं, जो अपनी मजबूती और सरलता के लिए जाने जाते हैं। यहाँ के कलाकार बड़े आकार के घड़े और भंडारण पात्र बनाने में विशेष दक्षता रखते हैं। उदयपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में सजावटी टेराकोटा वस्तुएँ अत्यधिक लोकप्रिय हैं। यहाँ के कलाकारों की कल्पनाशीलता और सूक्ष्म कारीगरी उनकी वस्तुओं में स्पष्ट दिखाई देती है।

इन सभी क्षेत्रों में कुम्हार समुदाय के कलाकार इस कला के प्रमुख संरक्षक हैं। यह एक पारिवारिक व्यवसाय के रूप में विकसित हुआ है, जिसमें बच्चे बचपन से ही इस कला को सीखते हैं। इस शिल्प में महिलाओं की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। वे मिट्टी को तैयार करने, उसे गूंथने, सजावट करने और अंतिम रूप देने में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

निर्माण प्रक्रिया

मृणशिल्प की निर्माण प्रक्रिया अत्यंत जटिल, श्रमसाध्य और धैर्यपूर्ण होती है। इसमें कई चरण शामिल होते हैं, जिनमें प्रत्येक का अपना महत्व है।

1. मिट्टी का चयन: इस प्रक्रिया की शुरुआत उपयुक्त मिट्टी के चयन से होती है। चिकनी और लचीली मिट्टी को प्राथमिकता दी जाती है, जो प्रायः नदी किनारे, तालाबों या खेतों से प्राप्त होती है। मिट्टी की गुणवत्ता ही अंतिम उत्पाद की मजबूती और सुंदरता को निर्धारित करती है।

2. मिट्टी की तैयारी: चयनित मिट्टी को छानकर उसमें से कंकड़-पत्थर और अन्य अशुद्धियाँ हटाई जाती हैं। इसके बाद उसमें पानी मिलाकर उसे अच्छी तरह गूंथा जाता है, ताकि वह मुलायम और लचीली हो जाए।

3. आकार देना: मिट्टी को आकार देने के लिए कुम्हार का चाक (पहिया) उपयोग किया जाता है। चाक को घुमाकर उस पर मिट्टी रखी जाती है और हाथों की सहायता से उसे वांछित आकार दिया जाता है। जटिल आकृतियों और डिज़ाइनों के लिए हाथ से निर्माण (हैंड-मोल्डिंग) की तकनीक भी अपनाई जाती है।

4. सुखाना: आकार देने के बाद तैयार वस्तुओं को धूप में सुखाया जाता है। यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि यदि वस्तुओं में नमी रह जाए तो वे पकाते समय टूट सकती हैं।

5. पकाना: सूखी वस्तुओं को भट्टी में उच्च तापमान पर पकाया जाता है। पारंपरिक रूप से यह प्रक्रिया लकड़ी, उपले या पत्तों के ईंधन से की जाती है। इस प्रक्रिया के दौरान मिट्टी कठोर और टिकाऊ बन जाती है तथा उसे विशिष्ट रंग प्राप्त होता है।

6. सजावट और फिनिशिंग: अंतिम चरण में वस्तुओं को रंगा, पॉलिश किया या उन पर नक्काशी की जाती है। प्राकृतिक रंगों और खनिजों का उपयोग कर उन्हें आकर्षक बनाया जाता है।

उत्पाद और आधुनिक विकास:

राजस्थान का मृणशिल्प समय के साथ निरंतर विकसित हो रहा है। पारंपरिक वस्तुओं के साथ-साथ अब आधुनिक डिजाइन और उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए नए उत्पाद बनाए जा रहे हैं। आजकल कलाकार मिट्टी से फूलदान, दीवार सजावट, लैंप, शोपीस, गार्डन डेकोर, टेबलवेयर और इको-फ्रेंडली उत्पाद बना रहे हैं। पर्यावरण के प्रति बढ़ती जागरूकता के कारण मिट्टी के उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है, क्योंकि ये प्राकृतिक, बायोडिग्रेडेबल और स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित होते हैं।

पर्यटन के विकास ने भी इस शिल्प को नई पहचान दी है। देश-विदेश से आने वाले पर्यटक राजस्थान की हस्तशिल्प वस्तुओं को खरीदने में विशेष रुचि दिखाते हैं, जिससे कलाकारों को आर्थिक लाभ मिलता है।

चुनौतियाँ और समस्याएँ:

हालांकि मृणशिल्प की परंपरा अत्यंत समृद्ध है, लेकिन आज के समय में यह कई चुनौतियों का सामना कर रही है। प्लास्टिक और धातु के बर्तनों की बढ़ती लोकप्रियता ने मिट्टी के बर्तनों की मांग को कम कर दिया है। इसके अलावा, मशीनों से बने उत्पाद सस्ते और टिकाऊ होने के कारण बाजार में प्रतिस्पर्धा बढ़ा रहे हैं।

कुम्हारों को उचित मूल्य न मिलना, आधुनिक तकनीक और बाजार तक सीमित पहुंच तथा युवा पीढ़ी का इस व्यवसाय से दूर होना भी इस कला के लिए खतरा पैदा कर रहे हैं।

संरक्षण और विकास की पहल:

सरकार और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों द्वारा मृणशिल्प के संरक्षण और विकास के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। हस्तशिल्प मेलों, प्रदर्शनियों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से कलाकारों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और ई-कॉमर्स के माध्यम से भी इन उत्पादों को वैश्विक बाजार तक पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा, डिज़ाइन नवाचार और आधुनिक तकनीकों का प्रशिक्षण देकर कलाकारों को बदलते समय के अनुरूप तैयार किया जा रहा है।

निष्कर्ष:

राजस्थान का मृणशिल्प एक जीवंत और समृद्ध परंपरा है, जो न केवल सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है, बल्कि यह आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। यह कला हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है और हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम इस अमूल्य धरोहर को संरक्षित करें, कुम्हार समुदाय का समर्थन करें और मिट्टी के उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा दें। यदि हम सामूहिक रूप से प्रयास करें, तो यह कला न केवल जीवित रहेगी, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

References

1. Contact Base. *Terracotta & Pottery | Koraput*. Roots to Prosperity, supported by Axis Bank Foundation, koraputlivingheritage.com. Accessed 4 May 2026.
2. देवदत्त शर्मा, राजस्थान का माटीशिल्प, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, 2013
3. धवलिकर एम. के., मास्टर पिसेज ऑफ इंडियन टेराकोटाज, मुम्बई, 1977, पृ.सं. 39-43
4. बंसल, वर्षा। "प्रागैतिहासिक से समकालीन काल तक मृण्मय फलक का स्वरूप।" *श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका*, खंड 6, अंक 11, जुलाई 2019, पृ. 26-31.
5. दीक्षित, बीना, और आशीष कुमार, "*भारतीय कला के विभिन्न रूपों का अध्ययन*" *IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)*, vol. 29, no. 12, ser. 1, Dec. 2024, pp. 71-76.

6. https://ravivardelhi.com/earthen-utensils-in-our-sanatan-culture/
7. https://www.jansatta.com/news-update/blue-pottery-jaipur-blue-pottery-jaipur-story-blue-pottery-gulabi-nagar-blue-pottery-ram-singh/54259/